

रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य, सत्र 12, उद्धार घटनाएँ, भाग 4, यीशु का पुनरुत्थान, आवश्यक परिणाम, भाग 1, यीशु का स्वर्गारोहण

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मसीह के उद्धार कार्यों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 12 है, मसीह की 9 उद्धारकारी घटनाएँ, भाग 4, यीशु का पुनरुत्थान, आवश्यक परिणाम, भाग 1, यीशु का स्वर्गारोहण।

हम प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान के उद्धारकारी महत्व के साथ मसीह की उद्धारकारी घटनाओं का अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

पहले से ही, क्योंकि वह जीवित है, विश्वासियों का पुनर्जन्म हो चुका है। वे इस जीवन में मसीह के पुनरुत्थान में उसके साथ जुड़ जाते हैं और आत्मा द्वारा उन्हें नया जीवन दिया जाता है। हम अभी तक अंतिम दिन मृतकों में से जीवित नहीं हुए हैं।

यह यीशु के पुनरुत्थान पर निर्भर है। हमारा पुनरुत्थान ही हमारा अंतिम उद्धार है। हम नई पृथ्वी पर महिमामय, अविनाशी, अमर और शक्तिशाली शरीरों में अनन्त जीवन के लिए उठाए जाएंगे जो पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं।

फिलिप्पियों 3:21, 1 कुरिन्थियों 15:42 से 43, और 52 से 53. यह क्यों सच है? क्योंकि मसीह हमारे पापों के लिए मरा और तीसरे दिन जी उठा। 1 कुरिन्थियों 15:20 से 22, मसीह के न जी उठने की स्थिति में होने वाले विनाशकारी परिणामों पर खुलकर चर्चा करने के बाद, और मैंने व्याख्यानों की इस श्रृंखला में पहले भी उल्लेख किया था, कि त्रिएकत्व के सिद्धांत के साथ-साथ, यह उन चीजों में से एक थी, जिसका उपयोग प्रभु ने मुझे अपने पास लाने के लिए किया।

मैं परमेश्वर की इस बात पर बहुत ही विनम्र और आश्चर्यचकित था कि यदि मसीह को नहीं उठाया गया तो क्या प्राप्त होगा? मूल रूप से, पूरी नींव ढह जाएगी, और इसने मुझे मसीह और सुसमाचार में विश्वास की ओर प्रेरित किया। 1 कुरिन्थियों 15:20 में पौलुस ने कहा कि, वास्तव में, मसीह को मृतकों में से उठाया गया है। वह जी उठे मसीह को, उद्धारण, उन लोगों का पहला फल कहता है जो सो गए हैं, श्लोक 20।

प्रथम फल पुराने नियम के अनुसार परमेश्वर को भेंट स्वरूप दिया जाने वाला प्रसाद था, चाहे वह झुंड से हो या खेत से, और आराधना करने वाले की ओर से, यह परमेश्वर के प्रति समर्पण को दर्शाता था, यह स्वीकारोक्ति कि परमेश्वर ने हमारे झुंड को आशीर्वाद दिया है या हमारी फसलों को आशीर्वाद दिया है। प्रभु की ओर से, उनका नियम, उन्हें प्रथम फल की बलि चढ़ाने के लिए

कहना, उनकी ओर से एक वादा था कि वे अपने लोगों को प्रथम फल के बाद प्रदान करेंगे। इसलिए, यह तथ्य कि यीशु प्रथम फल है, इसका अर्थ है कि और भी बहुत कुछ आने वाला है।

यीशु का पुनरुत्थान विश्वासियों को मृतकों में से अनन्त जीवन में उठाए जाने का कारण है। 1 कुरिन्थियों 15:21, 22. क्योंकि जैसे मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, वैसे ही मनुष्य के द्वारा मरे हुएों का पुनरुत्थान भी आया।

क्योंकि जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे। यह आदम की दूसरी नई सृष्टि की तस्वीर है, और यह निश्चित रूप से हमारे भविष्य के पुनरुत्थान के आधार के रूप में कब्र से यीशु के पुनरुत्थान पर जोर देती है। 1 कुरिन्थियों 15:47 से 49।

प्रेरित ने फिर से दो आदमों की तुलना की है। आदम, पहला मनुष्य, और यीशु, दूसरा और अंतिम आदम। 1 कुरिन्थियों 15:47 से 49 में।

उद्धरण, पहला मनुष्य धरती से था, मिट्टी से बना हुआ। दूसरा मनुष्य स्वर्ग से है। जैसे मिट्टी से बना हुआ मनुष्य था, वैसे ही मिट्टी से बने हुए मनुष्य भी हैं।

और जैसा स्वर्ग का मनुष्य है, वैसे ही स्वर्ग के लोग भी हैं। जैसे हमने मिट्टी के मनुष्य की छवि धारण की है, वैसे ही हम स्वर्ग के मनुष्य की छवि भी धारण करेंगे। परमेश्वर ने पहला मनुष्य मिट्टी से बनाया और उसका नाम आदम, एडम रखा। उत्पत्ति 2:7 में शब्द ज़मीन का अर्थ है आदम।

परमेश्वर का पुत्र स्वर्ग से नीचे आया, 1 कुरिन्थियों 15:47, जब वह मनुष्य बन गया। पॉल सिखाता है कि दो आदम से जुड़े लोग उनके जैसे हैं।

आदम के पतन के कारण, मनुष्य मिट्टी से बने हैं। हम पाप और मृत्यु में अपने पिता आदम का अनुसरण करते हैं। लेकिन मसीह में, विश्वासी स्वर्ग के हैं।

पद 48, स्वर्ग से, का अर्थ है परमेश्वर और नई सृष्टि की वास्तविकता में आधारित होना। पौलुस का कहना है कि हम भी स्वर्ग के मनुष्य की छवि धारण करेंगे। अर्थात्, हम पुनरुत्थान के शरीर में जी उठेंगे जैसे मसीह जी उठे थे।

हम मसीह, दूसरे और अंतिम आदम की तरह बनेंगे। क्योंकि वह जीवित है, इसलिए हमें अनंत जीवन और महिमा के लिए पुनरुत्थान का आश्वासन दिया गया है। एक बार फिर, यीशु का पुनर्जीवित जीवन हमें पतन के प्रभावों से बचाता है।

इसके अलावा, मसीह की प्रायश्चित मृत्यु नए स्वर्ग और नई पृथ्वी का उद्घाटन करती है। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान अब पुनर्जन्म और अनन्त जीवन लाता है। यह अंतिम दिन पर विश्वासियों के अनन्त जीवन के लिए पुनरुत्थान का कारण बनता है।

इसके अलावा, इसका ब्रह्मांडीय प्रभाव भी है। यीशु का पुनरुत्थान नए आकाश और नई पृथ्वी का उद्घाटन करेगा। पवित्रशास्त्र इन शब्दों से शुरू होता है; शुरुआत में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया।

बाइबल के अगले से आखिरी अध्याय में, यह कहा गया है, फिर मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी, क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली पृथ्वी चली गई थी, प्रकाशितवाक्य 21:1। बाइबल में पहली आयत से प्रकाशितवाक्य 21 :1 तक जाने पर, पतन हस्तक्षेप करता है और परमेश्वर सृष्टि को कैसे छुड़ाता है, जो रोमियों 8 के अनुसार बंधन और भ्रष्टाचार के अधीन थी। इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि को परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से छुड़ाएगा।

कुलुस्सियों 1:19 और 20 में, पौलुस मसीह को सभी चीजों का मेल-मिलाप कराने वाला होने की योग्यताएँ देता है। अर्थात्, पौलुस मसीह के व्यक्तित्व और कार्य को एक करता है, जैसा कि हमने पहले परिचय में कहा था, यह दिखाते हुए कि मसीह-विज्ञान प्रायश्चित की शिक्षा को कैसे प्रभावित करता है। क्योंकि उसमें परमेश्वर की सारी परिपूर्णता वास करने को प्रसन्न थी, कुलुस्सियों 1:19।

कुलुस्सियों 2:9 इस पाठ पर प्रेरित टिप्पणी प्रदान करता है। उद्धरण, उसमें, ईश्वरत्व की संपूर्ण परिपूर्णता शारीरिक रूप से निवास करती है। अर्थात्, यह केवल यीशु के बारे में नहीं कहा जा रहा है, वह पवित्र आत्मा से युक्त एक मनुष्य है।

यह ऐसा नहीं कह रहा है। यह कह रहा है कि जब आप इस आदमी के शरीर की ओर इशारा करते हैं, तो आप भगवान के शरीर की ओर इशारा कर रहे हैं। उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता शारीरिक रूप से निवास करती है।

शारीरिक रूप में, शारीरिक रूप में। यानी, वह ईश्वर का अवतार है। वह ईश्वर-मनुष्य है।

उस उद्धरण के कारण, परमेश्वर उसके द्वारा सभी चीजों को अपने साथ मिलाने के लिए प्रसन्न हुआ, चाहे वह पृथ्वी पर हो या स्वर्ग में, अपने क्रूस के लहू के द्वारा शांति स्थापित करके। घटनाएँ और चित्र अविभाज्य हैं। परमेश्वर घटनाओं के महत्व की व्याख्या करने के लिए चित्रों को चित्रित करता है।

और, बेशक, यह मेल-मिलाप की तस्वीर है। बड़ा सवाल यह है कि पौलुस का सभी चीजों से क्या मतलब है? परमेश्वर मसीह के ज़रिए सभी चीजों को अपने साथ मेल-मिलाप कराने के लिए प्रसन्न था। तात्कालिक संदर्भ में, यह अभिव्यक्ति चार बार आती है।

क्योंकि उसी के द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी की सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, चाहे दृश्य हो या अदृश्य, चाहे सिंहासन हो या प्रभुताएँ या शासक या अधिकारी। सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और उसी में सब वस्तुएँ स्थिर रहती हैं।

कुलुस्सियों 1 की आयत 16 और 17. हर बार, अर्थ एक ही है। सभी चीजें सभी सृजित वास्तविकता को इंगित करती हैं। पूर्व-अवतार पुत्र ने सभी चीजों का निर्माण किया।

श्लोक 16, दो बार। वह शाश्वत है। वह सभी चीज़ों से पहले अस्तित्व में था।

श्लोक 17, और वह ईश्वरीय कार्य करता है। उसमें, सभी चीज़ें एक साथ रहती हैं। इसलिए, श्लोक 17 में, जब श्लोक 20 कहता है कि उसने सभी चीज़ों को समेट दिया, तो हम उम्मीद करेंगे कि इसका अर्थ वही होगा।

मसीह ने सभी सृजित वास्तविकताओं को समेट लिया। इस निष्कर्ष की पुष्टि अगले ही शब्दों से होती है। उद्धरण, परमेश्वर उसके द्वारा सभी चीज़ों को अपने साथ समेटने के लिए प्रसन्न था, चाहे वह पृथ्वी पर हो या स्वर्ग में।

श्लोक 20. ये शब्द श्लोक 16 की प्रतिध्वनि हैं। उसके द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी चीज़ें बनाई गईं।

जैसे मसीह ने स्वर्ग और पृथ्वी की हर चीज़ को बनाया, वैसे ही वह स्वर्ग और पृथ्वी की हर चीज़ को समेटता है। इस संदर्भ में, मसीह ने जिन चीज़ों को समेटा है, उनमें स्वर्गदूत, बचाए गए मनुष्य और स्वर्ग और पृथ्वी शामिल हैं। बेशक, कुछ समस्याएँ आने वाली हैं।

स्वर्गदूतों का इसमें शामिल होना इस बात से संकेत मिलता है कि पद 16 स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीज़ों को उद्धरण के रूप में समझाता है, दृश्यमान और अदृश्य, चाहे सिंहासन हों या प्रभुत्व या शासक या अधिकारी। उद्धरण समाप्त करें। इन अभिव्यक्तियों के द्वारा, प्रेरित स्वर्गदूतों को नामित करता है।

1 कुरिन्थियों 15:24, इफिसियों 1:21, इफिसियों 6:12, कुलुस्सियों 2:15 की तुलना करें। लेकिन किस अर्थ में मसीह ने स्वर्गदूतों के साथ मेल-मिलाप किया? शास्त्र सिखाता है कि पतित न हुए स्वर्गदूतों को उद्धार की आवश्यकता नहीं है और पतित स्वर्गदूतों के लिए कोई उद्धार नहीं है। इन कारणों से, विद्वान मसीह द्वारा स्वर्गदूतों के साथ मेल-मिलाप को अपने शांतिपूर्ण राज्य को बनाए रखने के लिए उन्हें पराजित करने और वश में करने के रूप में बोलते हैं।

यहाँ एक मुख्य पाठ है कुलुस्सियों 2:15, जहाँ पिछली आयत में क्रूस के बारे में बात करने के बाद, पौलुस लिखता है कि उसने शासकों और अधिकारियों को निहत्था कर दिया और उसके द्वारा उन पर विजय प्राप्त करके उन्हें खुलेआम लज्जित किया। परमेश्वर ने उन्हें निहत्था कर दिया और उसके द्वारा उन पर विजय प्राप्त करके उन्हें खुलेआम लज्जित किया। उसका मतलब है मसीह।

मैंने पहले उल्लेख किया था कि यह एक बहुत ही दुर्लभ अस्पष्ट ग्रीक सरल सर्वनाम है, या यह या तो उसे या यह है। या तो वह मसीह, क्रूस के मसीह को संदर्भित करता है, या यह मसीह के क्रूस को संदर्भित करता है। या तो यह कौन सा है, या तो एक जो यह है, दूसरा निहित है।

मनुष्य भी मेल-मिलाप कर लेते हैं, जैसा कि कुलुस्सियों 1:20 के ठीक बाद की दो आयतें दर्शाती हैं। तुम भी, जो एक समय पराए और मन से शत्रुतापूर्ण थे, बुरे काम करते थे, अब उसकी मृत्यु के द्वारा उसके शरीर में मेल-मिलाप हो गया है, ताकि तुम्हें पवित्र और निष्कलंक, निर्दोष और

निष्कलंक बनाकर उसके सामने पेश करे। कुलुस्सियों के विश्वासी उन लोगों का एक नमूना हैं, जिनके साथ मसीह मेल-मिलाप करता है।

जब पॉल लिखते हैं कि परमेश्वर ने मसीह के माध्यम से सभी चीजों को अपने साथ मिला लिया, चाहे वे धरती पर हों या स्वर्ग में, तो उनका मतलब है कि विश्वासियों को बचाया गया, राक्षसों को वश में किया गया, और स्वर्ग और पृथ्वी को अभिशाप से मुक्ति मिली। मैं डग म्यू के सारांश में सुधार नहीं कर सकता। डग म्यू की टिप्पणियाँ उनकी लिखी किताबों पर मेरी पसंदीदा में से हैं।

रोमियों, वाह, उन्होंने ऐसा करने में एक दशक बिताया। कुलुस्सियों और गलातियों, उन्होंने जो किया वह बहुत ठोस है। जेम्स, वे सभी अच्छे हैं।

कुलुस्सियों 1:20 में ब्रह्मांडीय उद्धार या ब्रह्मांडीय मोचन नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय पुनर्स्थापना या नवीनीकरण की शिक्षा दी गई है। क्रूस पर मसीह के कार्य के माध्यम से, परमेश्वर ने अपनी संपूर्ण विद्रोही सृष्टि को अपनी संप्रभु शक्ति के शासन के अधीन वापस लाया है। मसीह में परमेश्वर के कार्य का उद्देश्य संपूर्ण ब्रह्मांड का उद्धार करना है, जो मानवीय पाप से दूषित है, रोमियों 8:19 से 22 तक।

यह तथ्य कि पतित मनुष्य ही मेल-मिलाप का प्राथमिक उद्देश्य हैं, यह बात आम तौर पर नए नियम और इस पाठ के अगले भाग से स्पष्ट है। कुलुस्सियों 1 आयत 21 और 20 से 23, लेकिन मेल-मिलाप के इस कार्य को मनुष्यों तक सीमित रखना एक गंभीर गलती होगी, जिसे हमेशा टाला नहीं जा सकता। क्लोज़ ने अपनी कुलुस्सियों की स्तंभ टिप्पणी को उद्धृत किया।

मसीह ने इस अद्भुत कार्य को पूरा करने के लिए क्या किया, सभी चीजों का मेल-मिलाप? पौलुस हमें बताता है, अपने क्रूस के लहू से शांति स्थापित करना। वह विशेष रूप से मसीह के क्रूस का उल्लेख करता है। क्या वह इस तरह यीशु के पुनरुत्थान को बाहर करना चाहता है? नहीं, क्योंकि मसीह के मेल-मिलाप कराने की योग्यता के बारे में बोलने से ठीक पहले, वह कहता है, वह शुरुआत है, मृतकों में से ज्येष्ठ है, श्लोक 18।

जैसा कि हमने इन व्याख्यानों में पहले बताया था, उनका मतलब है कि मसीह शुरुआत है, मृतकों में से ज्येष्ठ पुत्र के रूप में अपनी भूमिका में परमेश्वर की नई सृष्टि का स्रोत है, जो पुनर्जीवित होने के रूप में सर्वोच्च स्थान रखता है। हम निष्कर्ष निकालते हैं कि क्रूस पर चढ़ाए गए और जी उठे मसीह शांति निर्माता हैं। मुझे स्पष्ट करने की आवश्यकता है।

क्या यीशु द्वारा सभी बातों में सामंजस्य बिठाने से सार्वभौमिकता, हर अंतिम मानव का उद्धार शामिल है? मैं चार कारणों से नहीं का उत्तर देता हूँ। पहला कारण है कुलुस्सियों 1 में निकट संदर्भ। कुलुस्सियों 1:19 और 20 से पहले और बाद में, पौलुस संकेत देता है कि उद्धार में नैतिक क्षेत्रों में बदलाव शामिल है। यदि कुलुस्सियों ने इस परिवर्तन से नहीं गुज़रा होता, तो उनके पापों को क्षमा नहीं किया जाता।

कुलुस्सियों 1:13 और 21. दूसरा है पूरे पत्र की शिक्षा। जो लोग मेरे संडे स्कूल की कक्षाओं में गए हैं, वे पहचान लेंगे कि मैं संकेंद्रित वृत्तों से काम कर रहा हूँ, सबसे नज़दीकी वह छंद है जो उस

छंद के ठीक आस-पास है जिस पर हम काम कर रहे हैं, और फिर अध्याय, और फिर पुस्तक, और फिर पूरा नया नियम, और फिर पूरी बाइबल, अगर वह इस बिंदु पर प्रासंगिक था।

3:6 में पूरे पत्र की ओर बढ़ते हुए, पौलुस घोषणा करता है कि परमेश्वर का क्रोध विद्रोही मनुष्यों के विरुद्ध आ रहा है। हर कोई नहीं बचाया जाएगा। कुलुस्सियों 1:19 और 20 में सभी बातों की व्याख्या इस तरह करना एक गलती है जैसे कि यह सिखाता है कि मानो पौलुस ने उसी पत्र में खुद का खंडन किया हो।

तीसरा है पौलुस की पत्रियों की संपूर्ण शिक्षा। रोमियों 2 में, वह कहता है कि खोए हुए लोग क्रोध और रोष और क्लेश और संकट को प्राप्त करेंगे। रोमियों 2:8 और 9. 2 थिस्सलुनीकियों में, उद्धरण, जो लोग परमेश्वर को नहीं जानते हैं, वे अनन्त विनाश की सजा भुगतेंगे।

2 थिस्सलुनीकियों 1:8 से 9. चौथा, संदर्भ के मेरे संकेंद्रित वृत्तों का विस्तार, यदि आप चाहें, तो पूरे नए नियम की शिक्षा है। यीशु ने मत्ती 25, 46 में अनन्त दण्ड की चेतावनी दी है, और बाइबिल की कहानी के अंत में ईश्वर के शहर के बाहर मानव प्राणी शामिल हैं, प्रकाशितवाक्य 22, आग की झील में, ईश्वर के आनंद से अनन्त अलगाव की दूसरी मृत्यु को सहते हुए, प्रकाशितवाक्य 21:8 और 22:15। बस कोई प्रकाशितवाक्य 23 नहीं है जिसमें सभी को बचाया गया हो।

हम अपनी पसंद और नापसंद या अपनी पूर्वधारणाओं के अनुसार कहानी को फिर से नहीं लिख सकते। नहीं, सोला स्क्रिप्टुरा का अर्थ है कि हम लगातार और जानबूझकर अपने तर्क, अनुभव और परंपराओं को परमेश्वर के प्रकट वचन के अधीन करते हैं। प्रकाशितवाक्य 3:14, शायद एक आश्चर्यजनक, एक और मार्ग है जिसे सही ढंग से समझा जाता है जहाँ मसीह नए स्वर्ग और पृथ्वी का उद्घाटन करता है।

यहाँ, यीशु खुद को परमेश्वर की सृष्टि की शुरुआत के रूप में संदर्भित करता है। हालाँकि अधिकांश व्याख्याकार इसे इस शिक्षा के रूप में समझते हैं कि मसीह सृष्टि में पिता का प्रतिनिधि है, लेकिन मुझे यकीन है कि यहाँ यीशु खुद को मूल सृष्टि के लिए नहीं, बल्कि नई सृष्टि के लिए संदर्भित करता है। पहले, मैंने तीन कारण बताए थे।

मुझे इसके लिए तीन कारण बताने होंगे। पहला, यशायाह 65, 16, प्रकाशितवाक्य 3:14 में आमीन शब्द का स्रोत है। पूरी बाइबल में केवल दो आयतें हैं जो आमीन को एक नाम के रूप में समझती हैं।

यशायाह 65:16 की आयत के ठीक बाद की आयत कहती है, " देखो , मैं एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी बनाता हूँ, क्योंकि पिछली बातें स्मरण न रहेंगी और मन में भी नहीं आएंगी।" इसलिए, क्योंकि प्रकाशितवाक्य 3:14 से पहले का पुराना नियम, यानी यशायाह 65:16, नए आकाश और नई पृथ्वी के बारे में पुराने नियम के पहले संदर्भ के तुरंत बाद आता है, यह इस निष्कर्ष का समर्थन करता है कि प्रकाशितवाक्य 3:14 उसी विचार के बारे में बोलता है। दूसरा, प्रकाशितवाक्य 3:14 के अगले शब्द, विश्वासयोग्य और सच्चे गवाह, पाठकों को प्रकाशितवाक्य 1:5 की ओर वापस ले जाते हैं, जो यीशु मसीह, विश्वासयोग्य गवाह के बारे में बोलता है।

रहस्योद्घाटन की पुस्तक में गवाह शब्द का प्रयोग पाँच बार किया गया है। इनमें से तीन बार शहीदों और यीशु के मानवीय गवाहों का उल्लेख किया गया है। केवल दो स्थानों पर गवाह शब्द का उल्लेख यीशु के लिए किया गया है, 1:5 और 3:14।

यह जॉन का पाठकों को 1:5 के प्रकाश में 3:14 की व्याख्या करने का तरीका है। प्रकाशितवाक्य 3:14 आगे 1:5 में मसीह के शीर्षक को स्पष्ट करता है, जो सृष्टि के बारे में नहीं, बल्कि यीशु द्वारा मृत्यु और पुनरुत्थान का उपदेश देने के बारे में है। प्रकाशितवाक्य 3:14 भी छुटकारे के बारे में बताता है, सृष्टि के बारे में नहीं। तीसरा, प्रकाशितवाक्य 1:5 में अभिव्यक्ति, मृतकों में से ज्येष्ठ हमें कुलुस्सियों 1:18 में वापस ले जाती है।

वह शुरुआत है, मृतकों में से ज्येष्ठ है, और कुलुस्सियों में तुरंत पहले के शब्द सृष्टि की बात नहीं करते बल्कि चर्च की बात करते हैं, जो परमेश्वर की नई सृष्टि का एक हिस्सा है। और वह शरीर, चर्च का मुखिया है। इसलिए, हमें प्रकाशितवाक्य 3:14 में यीशु द्वारा खुद के वर्णन को परमेश्वर की सृष्टि की शुरुआत के रूप में व्याख्या करना चाहिए, जिसका अर्थ है 1:5 में उनके पुनरुत्थान में संदर्भ का विस्तार, मृतकों में से ज्येष्ठ।

एक शब्द में, उनके पुनरुत्थान को नई सृष्टि की शुरुआत के रूप में देखा जाता है। इसका मतलब है कि वह अकेला, जो मर गया और जी उठा, परमेश्वर की सृष्टि की शुरुआत है। यीशु वह है जो मरने के बाद भी जीवित है और जीवित व्यक्ति के रूप में परमेश्वर की नई सृष्टि की शुरुआत करता है।

कूस पर चढ़ाए गए और पुनर्जीवित मसीह ने पहले ही नए युग की शुरुआत कर दी है। वह उन सभी को अब पुनर्जन्म के द्वारा अनन्त जीवन देता है जो उस पर विश्वास करते हैं। जब वह फिर से आएगा तो वह उन्हें मृतकों में से अनन्त जीवन और पुनरुत्थान वाले शरीरों में जीवित कर देगा।

उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के शानदार फलों में से एक है नए स्वर्ग और पृथ्वी का प्रकाशन जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों ने बात की थी। यशायाह 65:17, 66:22, 2 पतरस 3:13। मसीह के उद्धार कार्य में दो अनिवार्य पूर्वापेक्षाएँ शामिल हैं।

उनका अवतार और पाप रहित जीवन। उनके उद्धार कार्य का हृदय और आत्मा, उनके उद्धार कार्य का आवश्यक सार, उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान है। अब हम उनके उद्धार कार्य के पाँच आवश्यक परिणामों में से पहले की ओर बढ़ते हैं, जो उनके मृत्यु और पुनरुत्थान के परिणाम भी उद्धार कार्य हैं, और वह है उनका स्वर्गारोहण।

द एसेंशन ऑफ आवर लॉर्ड में मसीह के स्वर्गारोहण के बारे में बात करते हैं। स्वर्ग वह स्थान और क्षेत्र है जहाँ से ब्रह्मांड का पालन-पोषण और शासन होता है। स्वर्ग वह स्थान और क्षेत्र है जहाँ से मोक्ष अंतरिक्ष और समय की दुनिया में आगे बढ़ता है।

ईश्वर के उद्धार को सर्वव्यापी और चिरस्थायी बनाने के लिए, देहधारी पुत्र, यीशु मसीहा, स्वर्ग लौट गए जहाँ वे सभी विश्वासियों के लिए हर जगह उद्धार का स्रोत बन सकते थे। स्वर्ग से, पवित्र आत्मा की एजेंसी के माध्यम से, देहधारी पुत्र ईश्वर के वचन का प्रचार करता है, ईश्वर की कलीसिया का

निर्माण करता है, और फिलिस्तीन के प्रतिबंधित क्षेत्र में शुरू हुए ईश्वरीय कार्य को जारी रखता है। अधिकांश ईसाइयों ने कभी भी मसीह के स्वर्गारोहण के उद्धारक महत्व पर विचार नहीं किया है।

इब्रानियों के लेखक हमें यीशु के स्वर्गारोहण के बारे में सिखाते हैं ताकि हमारी वर्तमान आशा को एक निश्चित आधार पर स्थापित किया जा सके। इब्रानियों के 6:19 में, हमें बताया गया है कि हमारे पास एक ऐसी आशा है जो स्वयं परमेश्वर की स्वर्गीय उपस्थिति में प्रवेश करती है। विश्वासी की आशा सबसे मजबूत आधार पर स्थापित है, क्योंकि मसीह स्वर्गारोहण कर चुका है और उसने उस पर्दे के पीछे परमेश्वर तक पहुँचने का विशेषाधिकार दिया है जो पहले मानवता को परमेश्वर से अलग करता था।

हमें अब इस उम्मीद में जीना है कि एक दिन हम भी वहाँ पहुँचेंगे जहाँ मसीह हमसे पहले गया था। वह हमारा अग्रदूत है, और उसके स्वर्गारोहण ने हमारे लिए भी परमेश्वर की स्वर्गीय उपस्थिति में रहने का मार्ग प्रशस्त किया। जिस तरह वह मर गया, जी उठा, और स्वर्गारोहित हो गया, उसी तरह हम भी उसके साथ पिता के स्वर्गीय घर में शामिल होंगे, यूहन्ना 14 :1 से 3। इब्रानियों 6 में शायद बाइबल में सबसे प्रसिद्ध चेतावनी वाला अंश है।

हालाँकि, यह आम ज्ञान नहीं है कि इसके तुरंत बाद एक मजबूत संरक्षण मार्ग है जिसका निष्कर्ष इब्रानियों 6:19 और 20 है। हमारे पास यह आशा आत्मा के एक निश्चित और दृढ़ लंगर के रूप में है, एक आशा जो पर्दे के पीछे के आंतरिक स्थान में प्रवेश करती है जहाँ यीशु हमारे लिए एक अग्रदूत के रूप में गया है, मलिकिसिदक के आदेश के अनुसार हमेशा के लिए एक उच्च पुजारी बन गया है। मसीह के स्वर्गारोहण के बचत महत्व को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए, और मैं इसे फिर से कहूँगा, ईसाई शायद ही कभी इस विषय के बारे में सोचते हैं।

सबसे पहले, स्वर्गारोहण मसीह का कार्य है। क्या स्वर्गारोहण को मसीह का कार्य कहना उचित है? सवाल इसलिए उठता है क्योंकि स्वर्गारोहण के वृत्तांतों में, प्राथमिक अभिनेता परमेश्वर पिता प्रतीत होता है। लूका ने कहा है कि लूका के स्वर्गारोहण के वृत्तांतों में मसीह को ले जाया गया और ऊपर उठाया गया।

ये दोनों क्रियाएँ दिव्य निष्क्रिय के रूप में जानी जाती हैं, जिसका अर्थ है कि जबकि कार्य करने वाला व्यक्ति स्पष्ट रूप से नहीं दिया गया है, संदर्भ और कार्य का प्रकार यह दर्शाता है कि यह ईश्वर है जिसने उठाया है, जो अपने बेटे को वापस स्वर्ग में ले जा रहा है। यह विचार कि स्वर्गारोहण में ईश्वर प्राथमिक अभिनेता है, प्रेरितों के काम 5:30 और 31 और 1 तीमुथियुस 3:16 में भी प्रतिध्वनित होता है। हालाँकि, जैसा कि अक्सर होता है जब त्रिएक ईश्वर के बारे में बात की जाती है, तो चीजें इतनी सरल नहीं होती हैं।

यूहन्ना के सुसमाचार में, यीशु स्वयं स्वर्गारोहण को अपनी सेवकाई में अगले चरण के रूप में बोलते हैं। उद्धरण, मैं अभी तक अपने पिता के पास नहीं चढ़ा हूँ, यूहन्ना 20:17। इसके अलावा, पौलुस और इब्रानियों के लेखक स्वर्गारोहण को मसीह की एक क्रिया के रूप में चित्रित करते हैं।

वह ऊपर चढ़ा, इफिसियों 4:8 पॉल कहते हैं, और एक महान महायाजक स्वर्ग से होकर गया है, इब्रानियों 4:14। इन सभी उदाहरणों में, मसीह स्वयं ही वह है जो अपने स्वर्गरोहण की घटना में सक्रिय है। इन दो महत्वों को देखते हुए, सबसे अच्छा तरीका यह है कि स्वर्गरोहण को त्रिएक के एक सहकारी कार्य के रूप में समझा जाए।

पिता मसीह को ऊपर उठाता है और उसे स्वर्ग से ऊपर उठाता है। मसीह स्वयं अपने पिता की इच्छा के अनुसार स्वर्ग में चढ़ता है और स्वर्ग से होकर गुजरता है। हालाँकि बाइबल स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं कहती है, लेकिन इस तथ्य से यह प्रमाणित होता है कि मसीह आत्मा का व्यक्ति है जो यह मानता है कि आत्मा ने यीशु को उसके स्वर्गरोहण में सशक्त बनाया।

इस त्रित्ववादी दृष्टिकोण को स्वीकार करते हुए, स्वर्गरोहण को मसीह के कार्य के रूप में सार्थक रूप से समझा जा सकता है। हालाँकि हमें पिता के कार्यों और निहित कार्य को नहीं भूलना चाहिए, लेकिन बाइबल ऐसा नहीं कहती है। मैं हमेशा पवित्र आत्मा के उस भेद को समझने की कोशिश करता हूँ।

इसलिए, स्वर्गरोहण भी यीशु के उद्धार कार्य का हिस्सा है। स्वर्गरोहण मसीह के अन्य उद्धार कार्यों का आधार है। जब हम मसीह के उद्धार कार्य को समग्र रूप से देखते हैं, तो स्वर्गरोहण का आधारभूत महत्व अन्य उद्धार घटनाओं के संबंध में इसका कार्य है।

स्वर्गरोहण मसीह के पिछले कार्यों की प्रामाणिकता की पुष्टि करता है और बाद के कार्यों के लिए एक प्रस्तावना और शर्त है। मसीह का स्वर्गरोहण इस बात की पुष्टि करता है कि वह वही है जो उसने होने का दावा किया था। वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था जो पापियों को बचाने और सृष्टि को पुनर्स्थापित करने के लिए दुनिया में आया था, और इसका प्रमाण यह तथ्य है कि मृतकों में से जी उठने के बाद, वह स्वर्ग में और परमेश्वर की उपस्थिति में राज्य करने के लिए चढ़ गया।

यूहन्ना 6 में, यीशु कहते हैं, " क्या होगा यदि तुम मनुष्य के पुत्र को उस स्थान पर चढ़ते हुए देखो जहाँ वह पहले था? स्वर्गरोहण मसीह के बाद के उद्धार कार्यों के लिए भी पूर्वापेक्षा है। सत्र, पिनतेकुस्त, मध्यस्थता, और दूसरा आगमन। भजन 110.1 और प्रेरितों के काम 2.33 से 36 तक यह स्पष्ट है कि मसीह को पिता के दाहिने हाथ पर बैठने के लिए ऊपर चढ़ना पड़ा, जिससे उसका स्वर्गीय सत्र या बैठना शुरू हुआ।

इसलिए, अपने स्वर्गरोहण के द्वारा, मसीह उस समय तक सारी सृष्टि पर राजा के रूप में अपना स्थान लेने में सक्षम था जब तक कि सभी चीजें पूरी तरह से उसके अधीन न हो जाएँ। मसीह के लिए पिनतेकुस्त के दिन आत्मा को भेजने के लिए भी स्वर्गरोहण आवश्यक था। मसीह ने यूहन्ना 16:7 में स्पष्ट रूप से यह दावा किया है। मैं तुमसे सच कहता हूँ, मेरा चले जाना तुम्हारे लिए अच्छा है।

क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा। मसीह के स्वर्गरोहण पर, उसने पिता से आत्मा प्राप्त की और फिर, महान भविष्यद्वक्ता, पुजारी और राजा के रूप में, अपने चर्च पर आशीर्वाद के रूप में आत्मा को उंडेला।

पवित्रशास्त्र अक्सर विचारों को एक साथ जोड़ता है - मसीह का स्वर्गारोहण और फिर सत्र, परमेश्वर के दाहिने हाथ पर उसका बैठना। मसीह की मध्यस्थता के लिए भी उसे स्वर्गारोहण की आवश्यकता थी।

और मसीह तभी फिर से आ सकता है जब वह पहले ही चला गया हो। सबसे पहले, मध्यस्थता। मसीह की स्वर्गीय सेवकाई तभी संभव है जब वह स्वर्ग में मलिकिसिदक की रीति पर हमेशा के लिए याजक के रूप में अपना स्थान ग्रहण करे।

अर्थात्, उसे धरती से स्वर्ग जाना है। यहाँ तक कि उसका दूसरा आगमन भी उसके स्वर्गारोहण पर निर्भर है क्योंकि वह तब तक फिर से नहीं आ सकता जब तक कि वह धरती को छोड़कर वापस वहीं न आ जाए जहाँ से उसने शुरुआत की थी। पतरस कहता है, वह इस यीशु के बारे में बात करता है, जिसे स्वर्ग में तब तक रहना चाहिए जब तक कि सब कुछ बहाल न हो जाए, प्रेरितों के काम 3:21। हालाँकि हम परमेश्वर की योजना के रहस्य को पूरी तरह से नहीं समझ सकते हैं, लेकिन इसके लिए यह आवश्यक है कि यीशु स्वर्ग में चढ़े और वहाँ पहुँचने के बाद, चर्च पर शासन करें और उसे सशक्त बनाएँ ताकि परमेश्वर का राज्य फैल सके।

मसीह का स्वर्गारोहण इस बात से बचाता है कि चर्च को स्वर्ग में यीशु से मिलने वाला हर लाभ तब तक असंभव होगा जब तक कि वह पहले वहाँ अपना स्थान लेने के लिए ऊपर न चढ़ जाए। स्वर्गारोहण और मसीह का पूर्ण बलिदान। मसीह के पुरोहिती कार्य को पूरा करने के लिए स्वर्गारोहण आवश्यक है।

यह उसे एक महान पुरोहिती के लिए योग्य बनाता है और उसे स्वर्ग में वह बलिदान प्रस्तुत करने में सक्षम बनाता है जो उसने पृथ्वी पर पूरा किया था। सांसारिक क्षेत्र से परे अपने स्वर्गारोहण के द्वारा, यीशु अपने बलिदान को स्वर्गीय पवित्रस्थान में ले जाने में सक्षम था, जहाँ सांसारिक मंदिर, तम्बू और मंदिर केवल छाया मात्र थे। पुराने नियम में बलिदान तब तक पूरा नहीं होता था जब तक कि भेंट परमेश्वर के सामने प्रस्तुत न की जाए।

इसलिए, हमें उम्मीद करनी चाहिए कि यह क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के सिद्ध बलिदान के लिए भी सत्य होगा। मसीह ने अपने स्वर्गारोहण के माध्यम से इसे पूरा किया जब वह स्वर्गीय पर्दे के पीछे से परमेश्वर पिता की उपस्थिति में गया और स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रस्तुत किया जो उसने क्रूस पर पूरा किया था। इस प्रकार हम उसके बलिदान की पूर्णता और स्वर्ग में पिता की उपस्थिति में पृथ्वी पर पूर्ण बलिदान प्रस्तुत करने में उसके पुरोहिती मंत्रालय की पूर्णता के बीच अंतर करते हैं, और इसके लिए उसके स्वर्गारोहण की आवश्यकता होती है।

यीशु के स्वर्गारोहण के उद्धारक महत्व की एक बहुत ही उपयोगी समझ स्वर्गारोहण और ईश्वरीय मेलमिलाप है। स्वर्गारोहण मानवता और ईश्वर के मेलमिलाप को एक नए स्तर पर ले जाता है। उत्पत्ति 3 में पतन के बाद, आदम और हव्वा को उनके विद्रोह के कारण ईश्वर की तत्काल उपस्थिति से बाहर निकाल दिया गया था।

हालाँकि हम समझते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें स्वीकार किया क्योंकि उसने उन्हें छुटकारे का पहला वादा दिया था, लेकिन अदन में उनके साथ सबसे मधुर संगति अतीत की बात थी। जबकि परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने लोगों, इस्राएल के साथ बातचीत करने के लिए विनम्रता जारी रखी, लेकिन पाप के कारण सबसे करीबी रिश्ता संभव नहीं था जिसने एक पवित्र परमेश्वर को उसके अधर्मी लोगों से अलग कर दिया था। अपने अवतार, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से, मसीह ने पाप की शक्ति को नष्ट कर दिया और लोगों को उस अधर्म से शुद्ध किया जो परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध को रोकता था।

और आश्चर्यजनक रूप से, यह पुराने नियम के इस्राएल तक भी विस्तारित हुआ। इब्रानियों 9.15 कहता है कि मसीह का बलिदान इतना प्रभावशाली था कि यह पापों के बलिदान से संबंधित था, क्षमा करें, यह व्यवस्था के तहत किए गए पापों से संबंधित था। यह आश्चर्यजनक है।

इस प्रकार यीशु का बलिदान वास्तव में पूरा होने से पहले ही प्रभावी था, क्योंकि परमेश्वर ने इसे अपने लोगों पर भविष्य में लागू किया। बेशक, हममें से बाकी लोगों के लिए, सिवाय किसी ऐसे व्यक्ति के जिसने क्रूस पर रहते हुए विश्वास किया, परमेश्वर इसे पूर्वव्यापी रूप से लागू करता है। फिर भी, अदन में मिली संगति कभी पूरी तरह से वापस नहीं आई, और फिर मसीह स्वर्ग में चढ़ गया, अपने साथ अपने अवतार के दौरान का पूरा मानव स्वभाव लेकर, प्रेरितों के काम 1:11। वहाँ पहुँचने के बाद, मसीह मानवता का अग्रदूत बन गया, इब्रानियों 6:19 और 20।

मसीह के स्वर्गारोहण और उसके बाद की उद्धारक घटनाओं के माध्यम से, उन्होंने मानवता और ईश्वरत्व के बीच घनिष्ठ संबंध को फिर से स्थापित करने के लिए आवश्यक सब कुछ किया। उन्होंने हर उस चीज़ को समाप्त कर दिया जो परमेश्वर को उसके लोगों से अलग करती थी। यह मानवजाति के लिए बड़ी आशा और आश्वासन का स्रोत है क्योंकि हमारे अपने जैसे लोगों में से एक, हमारी अपनी मानव जाति में से एक, परमेश्वर के दाहिने हाथ पर चढ़ गया है, जिससे हमारे लिए परमेश्वर के साथ पूर्ण संबंध में रहने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

यह परमेश्वर की योजना में और अपने पुत्र और आत्मा के माध्यम से इतिहास में अपनी योजना को लागू करने में अद्भुत है। इस तरह की अंतरंगता ईडन के समय से संभव नहीं थी। और केवल मसीह ही एक परिपूर्ण मानव, ईश्वर-मनुष्य के रूप में इसे पूरा कर सकता था।

परमेश्वर के लोग इस संगति का भरपूर आनंद केवल नई पृथ्वी पर पुनरुत्थित संतों के रूप में ही उठाएंगे। लेकिन अभी भी, उद्धारण, हमारी संगति पिता और उसके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है। पहला यूहन्ना 1, 3. यह केवल इसलिए संभव है क्योंकि मसीह मर गया और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर चढ़ गया।

1 यूहन्ना 2:1 और 2. हमारा प्रभु स्वर्गारोहित हो गया है। मसीह, जो मानवता की पूर्ण समानता में आया, एक वफादार और पाप रहित जीवन जीया, क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा, और कब्र पर विजयी हुआ। वह पिता के दाहिने हाथ पर अपना उचित स्थान लेने और अपनी सृष्टि पर शासन करने के लिए स्वर्ग में चढ़ गया है।

वह अपनी सांसारिक सेवा से स्वर्गीय सेवा में चले गए हैं, जिसे वह वर्तमान में अपने लोगों के लाभ के लिए निष्पादित करते हैं। स्वर्गरोहण की महिमा पर चर्चा करने के बाद, हम अपने अगले व्याख्यान में उनके स्वर्गीय सत्र की जांच करने के लिए आगे बढ़ते हैं। आमीन।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मसीह के उद्धार कार्यों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 12 है, मसीह की 9 उद्धारकारी घटनाएँ, भाग 4, यीशु का पुनरुत्थान, आवश्यक परिणाम, भाग 1, यीशु का स्वर्गरोहण।